International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 141-143

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 141-143
www.allresearchjournal.com
Received: 21-07-2016
Accepted: 22-08-2016

डॉ. उत्तम पटेल
एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला. वलसाड, गुजरात, भारत

Correspondence
डॉ. उत्तम पटेल
एसोसिएट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला. वलसाड, गुजरात, भारत

'पद्मावती समय' का काव्य-सौंदर्य

डॉ. उत्तम पटेल

सारांश
चंदबरदाई ''हिंदी के प्रथम महाकवि माने जाते हैं और इनका 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है।"[1] जिसमें कवि ने दिल्ली नरेश राजा पृथ्वीराज के जीवन-चरित को अभिव्यक्त किया है। आदिकालीन समय में आये दिन युद्ध हुआ करते थे। इसके मुख्य कारण थे- 1. राजाओं की आपसी दुश्मनी 2. राजकुमारियों के अपहरण और 3. राज्य की सीमा-वृद्धि। यही कारण है कि 'पद्मावती समय' जो रासो का बीसवाँ समय है, में कवि चंदबरदाई ने श्रृंगार, वीर, रौद्र, बीभत्स एवम् भयानक रसों का सजीव व यथार्थ अंकन किया है। कवि चंद सिर्फ कलम के धनी ही नहीं थे। वे समय आने पर तलवार भी ग्रहण करते थे। यही कारण है कि 'पृथ्वीराज रासो' में चंद ने जो युद्ध-वर्णन किए हैं वह हिंदी साहित्य में अनन्य हैं।

मूल शब्द: पद्मावती, सौंदर्य, बारात, युद्ध ।

प्रस्तावना
काव्य के दो प्रमुख पक्ष हैं भाव-पक्ष और कला-पक्ष। काव्य की आत्मा रस है। रस के बिना काव्य का कोई महत्व नहीं होता। किन्तु रसाभिव्यक्ति के लिए भाषा महत्वपूर्ण उपादान है। इसलिए काव्य में कला-पक्ष भी सबल होना चाहिए। क्योंकि कवि अपनी भावनाओं या कहें भाव-पक्ष की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है। इसलिए जिस प्रकार वृक्ष को पत्ते फूटते हैं वैसे ही कवि को शब्द फूटते हैं। कवि इन शब्दों को अलंकार, छंद, गुण, रीति आदि के द्वारा सजाता है जिससे उसकी अभिव्यक्ति सरस होती है। किन्तु जिस प्रकार प्राण विहीन शरीर का कोई महत्व नहीं होता वैसे ही भाव-रस विहीन काव्य निर्जीव बन जाता है। इस प्रकार काव्य में भाव-पक्ष का महत्व निसंदेह अधिक है। किन्तु भाव और कला पक्ष के सुनियोजन से ही काव्य के सौंदर्य में अभिवृद्धि होती है।

1. भाव (रस) व्यंजना
'पृथ्वीराज रासो' युद्ध-प्रधान काव्य है और इसमें तत्कालीन वीरत्व का सुंदर निरूपण हुआ है। रासो की प्रायः सभी घटनाएँ युद्ध-प्रधान हैं। 'पद्मावती समय' में मुख्य रूप से वीर एवम् शृंगार रसों का निरूपण हुआ है। गौण रूप में रौद्र, बीभत्स एवम् भयानक रसों की योजना भी हुई है।

1.1 वीर-रस: सेना-सज्जा, रण-प्रयाण, व्यूह-रचना, युद्ध, मारकाट, भगदड़ तथा रण-क्षेत्र के अनुभूतिपरक वर्णनों में वीर रस की व्यंजना मिलती है। निम्नलिखित पंक्तियाँ वीर रस का सुंदर उदाहरण हैं-

ब्रज्जिय घोर निसाँन । राँन चौहाँन चहों दिस ।
सकल सूर सामंत । समरि बल जंत्र मंत्र तस ॥
उट्ठठ राज प्रथिराज । बाग़ मनों लग वीर नट ॥
कढ़त तेग मनों बेग । लगत मनों बीज झट्ट घट॥
थकि रहे सूर कौतिग गिगन । रगन मगन भई श्रोन धर ॥
हर हरषि वीर जग्गे हुलस । हुरव रंगि नव रत्त वर ॥ [2]

चौहान नरेश पृथ्वीराज का हाथ में लेकर सिंह के समान क्रोधित होकर हाथियों के समूह पर टूट पड़ना. तलवार द्वारा शत्रुओं को काटकर रुण्ड-मुण्ड कर डालना तथा हाथियों के मस्तक फाड़ डालना भी वीर रस पूर्ण है।

1.2 श्रृंगार-रस: शृंगार के दोनों पक्षों-संयोग और वियोग का चित्रण कवि चंद ने 'पद्मावती समय' में किया है। संयोग शृंगार के अंतर्गत पूर्वराग का वर्णन मिलता है। शुक द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति के वर्णन सुनने पर पद्मावती प्रेम में बिद्ध होकर प्रफुल्लित हो उठती है.

सुनत स्रवन प्रथिराज जस । उमग बाल विधि अंग ॥
तन-मन चित्त चहुँआन पर । बस्यौ सु-रत्तह रंग ॥ [3]

उसका सारा शरीर रोमांचित हो उठता है। उसका तन, मन और चित्त प्रेम के रंग में चौहान वंशी पृथ्वीराज के वश में हो जाता है। इस प्रकार पद्मावती में पृथ्वीराज के गुणों को सुन पूर्वराग उत्पन्न होता है।
जबकि समुद्रशिखर नगर के पास राजा कुमोदमणि की बारात पहुँचने पर, संदेश भेजने के बावजूद राजा पृथ्वीराज के न आने से, राजकुमारी पद्मावती अपने महल में व्याकुल हो उठती है। उसका प्रेम से उमंगित मुख विषाद की छाया से इस प्रकार मलिन हो उठता है मानो राहु ने चंद्रमा को ग्रस लिया हो-

विलषि वास कूँवरि बदन । मनौं राह छाया सुरत ॥
झंषति गविष्ष पल-पल पलकि । दिषत पंथ दिल्ली सुपति ॥ [4]

और वह पृथ्वीराज के न आने से गोख में बैठी झाँकती हुई बार-बार क्षण-क्षण में पलकें उठाकर दिल्लीपति पृथ्वीराज का मार्ग जोहने लगती है। पद्मावती की इस स्थिति को शृंगार के वियोग पक्ष के अंतर्गत ली जा सकती है। ष्पद्मावती समय' में प्रवासजन्य या मृत्यु-जन्य करुण श्रृंगार का वर्णन नहीं है, क्योंकि इसमें ऐसी स्थितियाँ है ही नहीं।

1.3 रौद्र रस: पद्मावती के हरण का समाचार सुनकर समुद्रशिखर में रणभेरी बज उठती है। उसे सुनकर हाथी-घोड़ों पर हौदे और जीने कसी जाने लगती हैं, चारों ओर से योद्धा सज्जित होकर दौड़ पड़ते हैं। दौड़ते हुए वे आपस में एक दूसरे को पृथ्वीराज को पकड़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जैसे-

बाजी सुबंब हय गय पलांन। दौरे सुसज्जि दिस्सह दिसांन ॥
तुम्हु लेहु लेहु मुष जंपि जोध । हन्नाह सूर सब पहरि क्रोध ॥ [5]

1.4 बीभत्स रस: 'पद्मावती समय' में बीभत्स रस के उदाहरण मिलते हैं। एक उदाहरण दर्शनीय है। जैसे-

कहौं कमघ कहौं मथ्थ । कहौं कर चरन अन्त रुरि।
कहौं दंत मत्त हय षुर षुपरि । कुंभ भ्रसुंडह रुंड सब ॥ [6]

अर्थात् युद्धक्षेत्र में कहीं धड़, कहीं मस्तक, कहीं हाथ, कहीं पैर और कहीं अंतड़ियाँ बिखरी हुई पड़ी थीं। कहीं तलवार कंधे को काटती हुई पार हो जाती थी, कहीं सिर एक दूसरे से टकरा जाते थे और कहीं छाती फट जाती थी। कहीं मत्त हाथियों के दाँत, कहीं घोड़े के खुर और खोपड़ियाँ, कहीं हाथियों के मस्तक, सूडें तथा धड़ कटे हुए पड़े थे।

1.5 भयानक रस: जैसे-

1. उलटी जु राज प्रथिराज बाग़ । थकि सूर गगन धर धरात नाग ॥ [7]
2. करौ चीह चिक्कार करि कलप भग्गे । मदं तंजियं लाज उमंग मग्गे।
   दौरि गज अंध चहुँआन केरो । घेरियं गिरद्दं चिहौ चक्क फेरो ॥ [8]

1.6 वीर और श्रृंगार का समन्वय: 'पद्मावती समय' में वीर-भावना के साथ श्रृंगार का समावेश भी है। कोमल कल्पनाओं एवम् मनोहारी उक्तियों द्वारा वीर-भावना के साथ-साथ श्रृंगार का पुट देकर कवि ने अपूर्व चमत्कार दिखाया है। पृथ्वीराज चौहान शिव मंदिर में विद्यान है, पद्मावती पूर्व निश्चय के अनुसार शिवमंदिर में पूजा के लिए जाती है किन्तु पद्मावती पृथ्वीराज को पहले देख नहीं पाती और पूजा करती हैं। गौरी पूजा के बाद पद्मावती मुड़ती है तो मुड़ते ही उसका साक्षात्कार पृथ्वीराज से हो जाता है। उस समय लज्जा, मोह तथा उत्कंठा आदि भावों का सामंजस्य पद्मावती में देखते ही बनता है। कवि चंद उसका चित्रण बहुत ही स्वाभाविकता, सजीवता एवम् कोमलता से करते हैं-

फिर देख प्रथिराज। हँस शुद्ध मुद्ध कर पट्ट लाज॥ [9]

2. अलंकार-योजना: रासो में अलंकारों का प्रयास रहित प्रयोग कवि की महान कुशलता का परिचायक है। 'पद्मावती समय' में कवि ने शब्दालंकार और अर्थालंकार दोनों की स्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। वीर और श्रृंगार दोनों के वर्णनों में आलंकारिकता दर्शनीय है। कुछ मुख्य अलंकारों के उदाहरण निम्नलिखित हैं

2.1 अनुप्रास

1. भमर भंवहि भुल्लहि सुभाव । [10]
2. यह चाहत चष चक्रित । [11]
3. हरषत अनंद मन महि हुलस। [12]
4. आये हकारि हंकार करि। [13]
5. पदमिनिय रूप पदमावतिय। मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ [14]

2.2 यमक

1. भंडार लछिय अगनित पदम । सो पदम सेन कूँवर सुघर ॥ [15]
2. वर गोरी पद्मावतीए गहि गोरी सुरताँन ॥ [16]

2.3 उपमा: रति बसंत परमांन ॥ [17]

2.4 रूपक: मंडल भयंक वर नार सब । आनंद कंठह गाइयव ॥ [18]
वेस बिती ससिता सकल । आगम कियो बसंत ॥ [19]

2.5 उत्प्रेक्षा

मनहुँ कला ससिभांन । कला सोलह सो बन्निय ॥ [20]
पदमिनिय रूप पदमावतिय। मनहु कांम कामिनि रचिय ॥ [21]
मंत मद गलितं सै पंच दंती । मनों साँम पाहार बुग पंति पंती ॥ [22]

2.6 अतिशयोक्ति

इक नायक कर धरी । पिनाक धर भर रज रष्षह ॥ [23]

2.7 भ्रांतिमान

अरुन अधर तिय सधर । बिंब फल जानि कीर छवि ॥ [24]

2.8 दृष्टांत: ज्यौं रुकमनि कन्हर बरी । ज्यों वरि संभर कांत ॥
शिव मंडप पछिछम दिसा । पूजि समय स प्रांत ॥ [25]
कवि ने 'पद्मावती समय' में इन्हीं अलंकारों का मुख्य रूप से प्रयोग किया है। उनके अतिरिक्त वीप्सा, पुनरुक्त, पदमैत्री, व्यतिरेक आदि अलंकारों का प्रयोग भी कवि ने किया है।

3. छन्द: भाषा पर अचूक अधिकार रखने वाले कवि की छंद-भंगिमा स्वाभाविक है। हिंदी में चंद को छंदों का राजा कहा जा सकता है। भाव के अनुकूल नये-नये छंदों की गति धारण करती चलती है। रासो एक ही साथ संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की प्राचीन छंद परंपरा के पुनर्जीवन तथा हिंदी के नवीन छंद-संगीत के सूत्रपात की संधि बेला है। रासो में प्रमुख कवित्त छंद ही है। चंद को छप्पयों का राजा कहा गया है। विभिन्न यतियों के छप्पय की जो सुकर भंगिमा चंद ने दिखाई है, वह दुर्लभ है। 'पद्मावती समय' में कवित्त, छप्पय, दूहा, गाथा, पद्धरी, भुजंगी आदि छंदों का प्रयोग कवि ने किया है।

4. भाषा: कवि चंद बरदाई षट्भाषाओं के ज्ञाता थे। संस्कृत, प्राकृत, पैशाची, मागधी, शौरसेनी भाषाओं का प्रभाव चंद बरदाई पर अवश्य पड़ा था। 'पृथ्वीराज रासो' की भाषा को अपभ्रंश, डिंगल, पिंगल और मिश्रित माना जाता है। किन्तु इसमें वैज्ञानिकता नहीं है। डॉ. नामवर सिंह का इस संदर्भ में मत है- "पृथ्वीराज रासो की भाषा को पुरानी ब्रजभाषा कहने के साथ मैं इतना अवश्य जोड़ना चाहूँगा कि ब्रजभाषा को प्राचीनतम कवि सूरदास की रचनाओं से ब्रजभाषा का जो स्वरूप सामने आता है, उससे पृथ्वीराज रासो की भाषा पर्याप्त भिन्न है और यह भिन्नता काल-संबंधी ही नहीं, बल्कि प्रदेश संबंधी भी है।" [26]

रासो की भाषा भावानुकूल रूप धारण करती है। 'पद्मावती समय' में भाषा का यह गुण मिलता है। जहाँ कवि प्रेम जैसे कोमल भावों की व्यंजना करता है वहाँ भाषा माधुर्य गुण से युक्त है, परंतु युद्ध के वर्णनों में भाषा में ओज गुण की प्रधानता है। युद्ध के वर्णनों में भाषा में ओज अधिक हुआ है। युद्ध के वर्णनों में परुष-कठोर व्यंजना का प्रयोग अधिक हुआ है। जैसे-

षुरासान मुलतान षंधार मीरं । बलक सो बलं तेग अच्चूक तीरं ॥ [27]

'पद्मावती समय' में भाषा प्रयोग की दृष्टि से अलग-अलग रूप मिलते हैं। कहीं-कहीं प्राकृत और ब्रजभाषा का अद्भूत मिश्रण हुआ है। जैसे दृमन अति भयो हुलास, बिगसि बनु कोक किरन रवि।

अरुन अधर तिय सधर । बिंब फल जानि कीर छबि ॥
यह चाहत चष चक्रित । उहजु तक्किय झरप्पि झर ॥
चंच चहुट्टिय लोभ । लियौ तब गहित अप्प कर ॥
हरषत अनद महि हुलस । लै जु महल भीतर गई ॥
पंजर अनूप नग मनि जटित । सो तिहि मँह रष्षत भई॥ [28]

इस पद में तक्किय, झरप्पि, चहुट्टिय, अप्प, हरषत आदि प्राकृत के तो बिगसि, चष, सघर, महि, मनि, तिहि आदि ब्रजभाषा के शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं खिताबी, हसम, हुजूर आदि अरबी-फारसी शब्द भी मिलते हैं.

हसम हयग्गय देस अति । पति सायर म्रज्जाद ॥
प्रबल भूप सेवहिं सकल । धुनि निसाँन बहु साद ॥ [29]

इस पद में षट्भाषा का मिश्रण देखने योग्य है। 'पद्मावती समय' में संस्कृत के मृग, हीर, कीर, छत्रपति, हरि, काम, कला आदि तो अर्ध मागधी के नयर, सायर आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

निष्कर्ष: संक्षेप में, 'पद्मावती समय' में अलग-अलग रसों की सुंदर नियोजना हुई है। विशेषकर वीर-रस के वर्णन में तो कवि चंद सिद्धहस्त हैं। भाव के अनुकूल शब्द-योजना में चंद निपुण थे। छंदों के राजा कवि चंद की भाषा भाव के अनुकूल छंदों को ग्रहण करती है। इसमें कवि ने भिन्न-भिन्न छंदों का सहज प्रयोग किया है। कवि चंद बरदाई छः भाषाओं के ज्ञाता थे जिसका प्रमाण रासों में मिलता है। इससे कहा जा सकता है कि भाव एवम् कला पक्ष की दृष्टि से 'पद्मावती समय' 'पृथ्वीराज रासो' का एक श्रेष्ठ सर्ग है।

संदर्भ-संकेत

1. शुक्ल, रामचंद्र (2016) हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 47, नई दिल्ली, ज्ञान विहार एजूकेयर
2. पंड्या, मोहनलाल विष्णुलाल संपा-दास, श्यामसुंदर (संपा.) (सं. 2051), पृथ्वीराज रासो भाग-1, पृ. 581, वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा
3. वही. पृ. 577
4. वही. पृ. 579
5. वही. पृ. 580
6. वही. पृ. 581
7. वही. पृ. 580
8. वही. पृ. 582
9. वही. पृ. 580
10. वही. पृ. 576
11. वही.
12. वही.
13. वही. पृ. 580
14. वही. पृ. 575
15. वही.
16. वही. पृ. 591
17. वही. पृ. 575
18. वही. पृ. 591
19. वही. पृ. 577
20. वही. पृ. 575
21. वही.
22. वही. पृ. 578
23. वही. पृ. 575
24. वही. पृ. 576
25. वही. पृ. 578
26. सिंह, नामवर (2007), पृथ्वीराज रासोः भाषा और साहित्य, पृ. 254, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
27. पंड्या, मोहनलाल विष्णुलाल संपा-दास, श्यामसुंदर (संपा.) (सं. 2051), पृथ्वीराज रासो भाग-1, पृ. 581, वाराणसी, नागरीप्रचारिणी सभा
28. वही. पृ. 576
29. वही. पृ. 575